शिक्षा और
साहित्य-जगत् में
ट्रांसजेंडर के
विविध रूप
सम्पादक
डॉ॰ रश्मी उपाध्याय
अमित कुमार दूबे

# शिक्षा और साहित्य-जगत् में ट्रांसजेंडर के विविध रूप

सम्पादक
डॉ० राखी उपाध्याय
अमित कुमार दूबे

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स
बी-508, गली नं.17, विजय पार्क,
दिल्ली-110053
मो. 08527460252, 09990236819
ईमेल: jtspublications@gmail.com

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स, दिल्ली

# शिक्षा और साहित्य-जगत् में ट्रांसजेंडर के विविध रूप

सम्पादक
डॉ० राखी उपाध्याय
अमित कुमार दूबे

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन- फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक/ संपादक/ प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित शोध-पत्रों में निहित विचार तथा संदर्भों का संपूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है। संपादक/ प्रकाशक इसके लिए उत्तरदायी नहीं है।

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : २०२१
ISBN 978-93- 92611-09-4

प्रकाशक
जे०टी०एस० पब्लिकेशन्स
बी-५०८, गली नं०१७, विजय पार्क, दिल्ली-११००५३
दूरभाष : ०८५२७ ४६०२५२, ०११-२२६११२२३
E-Mail : jtspublications@gmail.com
मूल्य : ६६५.०० रूपये

आवरण : प्रतिभा शर्मा, दिल्ली
मुद्रक : तरुण ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली

Shiksha Aur Saahity-Jagat Mein Traansajendar Ke Vividh Roop
Edited by Dr. Raakhee Upaadhyaay, Amit Kumar Dubey

12. तृतीय लिंगी समुदाय की व्यथा : नाला सोपारा 114
डॉ. राखी उपाध्याय
13. हिन्दी कथा साहित्य में किन्नर विमर्श 121
डॉ. प्रियंका
14. ट्रांसजेण्डर समाज में शोषण के विविध स्वरूप 134
सत्यप्रकाश
15. शिक्षा व साहित्य-जगत में ट्रांसजेंडर के विविध रूप 'नालासोपारा में किन्नर विमर्श' 140
सुनीता वर्मा
16. समकालीन हिंदी साहित्य में किन्नर 149
डॉ. कविता यादव
17. किन्नर समाज एवं मूल अधिकार 155
डॉ. विवेक कुमार[1], डॉ. जे. एस. चांदपुरी[2]
18. ट्रांसजेंडर संघर्ष के विविध रूप 165
वर्षा पाल
19. हिंदी फिल्मों में क्वीर की स्वीकार्यता 173
अभिरामी. सी. जे[1], डॉ. शशि प्रभा जैन[2]
20. हिंदी आधुनिकता में एक नए विमर्श : किन्नर विमर्श का आगमन 178
सुरेन्द्र कुमार
21. हिन्दी कथा साहित्य में किन्नर विमर्श 188
प्रो. वेला मेहता
22. ट्रांसजेंडर शिक्षा : समस्याएँ एवं समाधान 200
अश्वनी[1], अजीत कुमार वोहत[2]
23. "किन्नर कथा"-सम सामयिक परिप्रेक्ष्य में 213
डॉ. शोभना कोक्काडन

23

# "किन्नर कथा" - एक सामाजिक परिप्रेक्ष्य में

डॉ. शोभना [illegible]

भारत संस्कृति जितनी पुरानी है, हिजड़ों की संस्कृति भी उतनी ही पुरानी है। प्राचीन काल से दुनिया भर में ये मौजूद थे। रामायण और महाभारत में भी किन्नरों का उल्लेख मिलता है। जैन, बौद्ध, और वैदिक संस्कृत के प्रमुख ग्रंथों में हिजड़ों का वर्णन है। मुगल काल में और राजपूत काल में किन्नरों को राजमहल में रानियों की रक्षक के रूप में रखा गया है। भारत में मुगलदरबारों में किन्नरों की काफी इज्जत हुआ करती थी, उन्हें राजा का करीबी माना जाता था, और इतिहासकारों का यहाँ तक मानना है कि कई लोग अपने बच्चों को किन्नर बना दिया करते थे, ताकि उन्हें राजा के पास नौकरी मिल जाए। लेकिन आज हालत यह है कि किन्नरों को समाज से अलग करके देखा जाता है, वे न ही शिक्षा पा सकते हैं और न कोई नौकरी कर सकते हैं।

किन्नरों के रीति रिवाज, रहन सहन, आचार अनुष्ठान आदि आम आदमी से भिन्न है। वे साधारण मानव से दूर किन्नर समाज के विधि विधान के अनुसार जीते हैं। देश में तृतीय लिंगी के रूप में इन्हें संवैधानिक मान्यता प्राप्त हुई है, फिर भी उनकी दशा में कोई परिवर्तन नहीं आया है। आज भी किन्नर समुदाय की आर्थिक, सामाजिक स्थिति बहुत खराब है, इसलिए भीख माँगने तथा वेश्यावृत्ति करने के लिए वे मजबूर हैं। समाज में, परिवार में आज भी वे तिरस्कार और हीन दृष्टि के पात्र हैं।

महेन्द्र भीष्म के उपन्यास किन्नर कथा में किन्नरों के दर्दनाक जीवन का

हिन्दी विभाग अविनाशीलिंगम इंस्टिट्यूट फार होम साइंस एण्ड हायर एजुकेशन फार विमेन, कोयम्बटूर (तमिलनाडु)